मुझे

विधाता

बनना

है

eq>s fo/kkrk cuuk gS @ 1

27-03-2008

2 @ eq>s fo/kkrk cuuk gS

27-03-2008

मुझे विधाता बनना है

रमेश पोखरियाल 'निशंक'

विनसर पब्लिशिंग कम्पनी
देहरादून

eq>s fo/kkrk cuuk gS @ 3

27-03-2008

मुझे विधाता बनना है

: **रमेश पोखरियाल 'निशंक'**

संस्करण : प्रथम, 2005
ISBN : 81-86844-01-9
मूल्य : Rs. 150/-
प्रकाशक : **विनसर पब्लिशिंग कम्पनी**
प्रथम तल, नैथानी काम्प्लेक्स
120, डिस्पेन्सरी रोड, देहरादून-248001
शब्द संयोजन : विनसर कम्प्यूटर्स
56/6 कैनाल रोड, जाखन
देहरादून
दूरभाष : 3094463
वितरक : मलिका बुक्स
348 मेन रोड, संत नगर (बुराड़ी)
दिल्ली-110084
दूरभाष : 27612927
मुद्रक : एलाइड प्रिन्टर्स
देहरादून

K------------------- Price : Rs. 150/

4 @ eq>s fo/kkrk cuuk gS

27-03-2008

अनुक्रम

भाग १

ऋतुपर्ण	11
जीवन यों न चला जाए	12
श्रृंगार बन जाता	13
महाप्रलय	14
साधना	15
कांटों में जीते हैं	16
सिसक न जाये	17
बलिदानी पथ का नवफूल	18
मुझे विधाता बनना है	19
मैं निशंक बढ़ रहा	20
पग-पग होगा मंजिल में	21
राष्ट्र माता	22
मेरे गीतों से	23
गीत	24
कैद पड़ी श्वासें	25
तोड़ो सन्नाटा	26

भाग २

जिन्दगी जहर है	27
सिसकती श्वासों को	28
बदलते गाँव	29
अन्दर आग बाहर तूफान	30
प्रातः हूं	31
उलझन	32
मैं मधुबन दर्शन	33
प्रश्न	34
ज्योति दिल में	35
क्या होगा ?	36
डगमगाते मत समझना	37
जीवन बसन्त	38

भाग ३

डाली	39
वेखबर	40
दिल न बुझा पायें	41
जिन्दगी की राह पर पुकार खो गई	42
मन ही मन रोया	43
साथी पाया	44
मैं पीर हूं तुम्हारी	45
तड़फा था	46
गूंगे उदगार	47
तूफानी रात	48
अन्तस्थल में	49
चिन्ता	50

ऋतुपर्ण

अनुभूमिका

मेरे निखिल 'समर्पण' से 'अंकुर',
बने हैं, तो लो यह ऋतुपर्ण ।
मैंने अर्पण में कभी न देखा,
जात-पात क्या कोई वर्ण ।

था मेरा यह विश्व-समर्पण,
जिसको सबने ही अपनाया ।
और तोड़ क्षुद्र भावनायें,
देखी मैंने राष्ट्र काया ।

जिसने मुझको जन्म दिया है,
और महत मानव का तन ।
उसी राष्ट्र देव को है मेरा,
सदा समर्पित यह तन-मन ।

यह 'ऋतुपर्ण' सुशोभित हैं,
स्वयं में लिये अमृत फल ।
ये ही राष्ट्र को दे सकते हैं,
शक्ति भक्ति आत्मिक बल ।

◈◈

जीवन यों न चला जाए

मन में यही है चिन्ता,
पौरुष व्यर्थ न जाये ।
आँधियों में जलता यह,
दीपक बुझने न पाये ।

प्रात प्रभा में, आये न रात,
इसका मुझको रखना ध्यान ।
पूर्ण प्रभा ही दिन बन जाये,
तभी रहेगा मानव मन ।

सोया जब निशि पल में,
चिन्ता यही रही है ।
'सोया तो सब खोया'
सबने बात कही है ।

दुनिया के सब रंग मिले हैं,
रहे सदा बादल छाये ।
कोमल पुष्प न मुरझाये,
जीवन यों न चला जाये ।

श्रृंगार बन जाता

प्रीति ! मेरे गीत की, संगीत बन जाती अगर,
प्रात ! मेरी जिन्दगी का, श्रृंगार बन पाता अगर ।
पुस्कराते पुष्प मेरे, सुरभि को लाते अगर,
पास ही गुंजार कर, भ्रमर भी आते अगर ।
साधना में लीन मैं, अनुराग पा जाता,
लो ! उन्मुक्त हो मैं, नृत्यकर मधुगीत गाता ।

क्षणिक यौवन का पुष्प यदि, देव को चढ़ जाता अगर,
बैठे हिमालय गोद में मैं, गम्भीरता लाता अगर ।
धूल बनकर सैकड़ों, चरणों में, मिल पाता अगर,
हर कश्ट भी जीवन में मेरे, उत्साह को लाता अगर ।
तो निकलकर भव जाल से मैं, मुक्त हो जाता सदा,
साधना मैं लीन मैं, अनुराग को पाता सदा ।

महाप्रलय

जग में, विष का प्याला भर,
मैंने खूब पिया है ।
दंशन करते साँपों को भी,
मैंने प्यार किया है ।

हृदय क्या पाषाणों को,
स्वयं पिघलते देखा है ।
सघन बनों की भीषणता को,
सहज बदलते देखा है ।

घोर अँधेरी रातों में,
चाँद चमकते देखा है ।
कागज के फूलों को मैंने,
खूब महकते देखा है ।

सुख के, दुख के, आँसू देखे,
जन-जन निर्भय देखा है ।
क्षण में बनते और बिगड़ते,
महाप्रलय भी देखा है ।

साधना

सदा दुखों के घेरे में, जिसने दु:ख न जाना,
घोर अँधेरी रातों को, जिसने विकट न माना ।

प्रकाश मिला न हृदय को तो,
स्वयं जला प्रकाश बना ।
ध्येय साधना के पथ को,
जिसने सर्वोत्तम है गिना ।

जीवन बोझ से झुके कन्धे, जिसने व्यर्थ न माने,
निज का दीपक नहीं जलाया, अपने सुख को पाने ।

आशा थी, विश्वास भरा था,
साहस ही तो जीवन था ।
मृत्यु निराशा की सब घूँटें,
पीकर जीवित जीवन था ।

काँटों में जीते हैं

दुखी दिलों के हम हार बनते,
फूल बनकर हम श्रृंगार करते ।
स्वयं स्नेह बनकर हम प्यार भरते,
उपकार बन हम परोपकार करते ।

हम जूझने में प्रसन्न रहते,
संघर्ष करना हम ही सिखाते ।
पनपे जहाँ दलदल कीचड़ों में,
काँटों में जीना हम ही दिखाते ।

सुगन्ध बनकर, हम मन समाते,
चाहे भले हम दुख दर्द पाते ।
बैठे नहीं हम आँसू बहाते,
देखा सभी ने हमें गीत गाते ।

हम जो खुशी से हो समर्पित,
तो धन्य दुख को हम मानते ।
कोंपल कली हों या पुष्प विकसित,
गिरना उलझकर हम नहीं जानते ।

27-03-2008

सिसक न जाये

मानव तेरी देशभक्ति, कहीं सिसक न जाये ।
राष्ट्र का नैतिक बल, कहीं क्षीण न हो पाये ।।

जिस माटी में जन्म मिला,
हृष्ट पुष्ट अमृत जीवन ।
माता है यह अरे ! हमारी,
किया है जिसने विकसित यौवन ।

शक्तियुक्त इस यौवन में, उन्माद कभी न आये ।
मानव तेरी देशक्ति कहीं सिसक न जाये ।।

जिसका कण - कण बलिदानी,
इतिहास बना सीमा पत्थर ।
दूसरों के संताप पिटाके,
नारायण बन जाता नर ।

मातृभक्ति की निष्ठा पर, आँच न आने पाये ।
मानव तेरी देशभक्ति, कहीं सिसक न जाये ।।

बलिदानी पथ का नवफूल

चाहे मार्ग कंकरीला हो,
चाहे चुभें अंग में शूल ।
सज्जित होने मातृ चरण में,
मैं बनूँ भगवन ! वनफूल ।

मैं उस राह उगूँ, हे भगवान,
मातृभक्त, जिस राह चले ।
श्रृंगार बनूँ उनके उर का,
चाहे शोभित पाँव तले ।

जिस राह हजारों वीर चले,
मुझे चाहिए उस राह की धूल ।
उगूँ तो माँ के चरण चढ़ूँ,
मुझको क्षार मिले या शूल ।

खिलूँ तो केवल हर्षित करने,
वीरों का बलिदानी पथ ।
खुश रहूँ माँ के चरणों में,
स्वीकार नहीं इन्द्रासन रथ ।

विनय हमेशा करता इतना,
नहीं इसे तुम जाना भूल ।
मुझे बनाना सदा हे भगवान,
बलिदानी पथ का नवफूल ।

27-03-2008

मुझे विधाता बनना है

मुझे विधाता बनना है,
अन्तर में ज्योति जलानी है ।
निज को मुझ से निर्णय लेकर,
सदा सफलता पानी है ।

विश्वास जगाना है मुझको,
अब गीत विजय के गाने हैं ।
पर्वत चाहे गगन चूमते,
मुझे धरा पर लाने हैं ।

मिटते इन पग चिन्हों पर,
आँख मूँद नहीं जाना है ।
निज पौरुष को जला-जला,
मार्ग नया बनाना है ।

मैं निशंक बढ़ रहा

मैं निशंक बढ़ रहा ।
जाति पाँति को हटा,
भेद - भाव को मिटा,
हृदय - हृदय के तल पहुँच,
विजय के गीत गा रहा,
मैं लक्ष्यहीन हूँ नहीं,
पथ कंटकों पर जा रहा,
जो भाग्य से मिला मुझे,
स्वदेश प्रेम पढ़ रहा ।

तूफान गोद में बिठा,
अंधकार को मिटा,
सब बेड़ियों को तोड़कर,
स्नेह सूत्र जोड़कर,

कंटकों को मैं सहज,
प्रशस्त मार्ग कर रहा ।
दिशा - दिशा प्रकाश कर,
लक्ष्य ओर बढ़ रहा,
आया जो सामने समझ गया,
वह जड़ रहा,
मैं निशंक बढ़ रहा ।

पग-पग होगा मंजिल में

सूर्य उगे तो दिवस चले, अंधकार मिट जायेगा ।
बलिदानों की गाथाओं को, पल-पल गाया जायेगा ।

खेतों में हरियाली होगी, कण-कण सोना उगलेगा,
डाली-डाली झूम उठेगी, भाग्य विश्व का बदलेगा ।
घर-घर में खुशहाली होगी, मंगल गाया जायेगा,
बलिदानों की गाथाओं को पल-पल गाया जायेगा ।

सूखे, फल वाले, तरुओं को, जब दूध से सींचा जायेगा,
हर गोदी में फूल खिलेंगे, घर-घर वैभव पायेगा ।
निर्धनता की परिभाषा को, जड़न्त मिटाया जायेगा,
बलिदानों की गाथाओं को पल-पल गाया जायेगा ।

गूँजेगी गुरु गौरव गाथा, हर गीत सुहासित ही होगा,
मंगलमोद घरों का अब, नया तराना ही होगा ।
श्रद्धा से जग अवनत होगा, राष्ट्र विभव बढ़ जायेगा,
बलिदानों की गाथाओं को, पल-पल गाया जायेगा ।

सत्य सदा पथदर्शक होगा, गौरव होगा दिल-दिल में,
प्रगति बढ़ती जायेगी, पग-पग होगा मंजिल में ।
राष्ट्रीय नैतिक मंजिल को मजबूत बनाया जायेगा,
बलिदानों की गाथाओं को, पल-पल गाया जायेगा ।

राष्ट्र माता

नमन करता तव चरण में,
धन्य होऊँ राष्ट्र माता ।
आ गया यदि तब वरण में ।

सिन्धु सी गम्भीर माँ तुम,
गगन सी विस्तार वाली ।
विश्व की पुंजित धरा में,
कीर्ति-शिखरी हो शिवाली ।
एक मोती हार का मैं,
क्यों रहूँ यों ही क्षरण में ?

ध्येय चिन्तन, शुद्ध है तन,
साधना है देना तेरी ।
सुमन है चरणों में तेरे,
स्वीकार लो यह भेंट मेरी ।
मैं हूँ सुत-अनुचर एक तेरा,
आराधना करता शरण में ।
नमन करता तब चरण में ।

मेरे गीतों से

अधरोष्ठ की मुस्कानों से विपदा, शरमाती चली गयी ।
देख लालिमा आँखों की, रात अँधेरी चली गयी ।

संघर्षों को देख निकट, संकट भी सब दूर हुए,
निज स्वयं वरदान बना, अभिशाप सभी चूर हुए ।

कर्मशील के तेज प्रचण्ड से, किस्मत सारी बदल गयी,
अब तक थीं जो राह रोके, सब ही चट्टानें ढल गयीं ।

मेरे गीतों के स्वरों ने सबका नव श्रृंगार किया,
सम्मानित हों या अपमानित, पर संघर्ष स्वीकार किया ।

गीत

अखिल विश्व में अब चमक उठे,
प्यारा हिन्दुस्तान !
प्यारा हिन्दुस्तान !

गरज उठा है श्वेत प्रहरी,
उठा देश का कण - कण है,
भरत भूमि की रक्षा करने,
आज खड़ा हर जन - मन है,
न्यौछावर कर तन को,
करें राष्ट्र उत्थान ।
प्यारा हिन्दुस्तान ।।

झर - झर कर झरने भी गाते,
उठो - उठो अब सुप्त न हो,
स्वयं स्वार्थ के गीतों में,
ए हिन्दू ! तू लुप्त न हो,
जाग उठा है देशभक्त अब,
जागी है प्यारी विहान,
प्यारा हिन्दुस्तान ।।

पावन माटी का कण - कण,
शान्ति सन्देश ले उड़ता है ।
नदियों का मल - मल निनाद,
उन्मन - उन्मन कर जुड़ता है ।
गुंजित हो जो विश्व गगन में,
करें राष्ट्र का गान,
प्यारा हिन्दुस्तान ।।

कैद पड़ी श्वासें

उदीप्त ज्योति ने तिमिर भगाया,
जन–जन ने नव जीवन पाया ।

नव रुधिर नव अंकुर ने,
एक नया निर्माण किया ।
हर जीवित निर्जीव सा था,
उन्हें भी नव प्राण दिया ।

बलिदान के बढ़ते गौरव ने,
धरा के पूरित वैभव ने,
अजेय बने इस मानव ने,
घुटती श्वासें मुक्त करीं,
कैद पड़ी घुटती श्वासों में,
आशा की अमि बूँद भरी ।

रुधिर–सिक्त पथ के जीवन में,
साहसता के हर कण में,
झुकते हैं पर्वत तारे
थक चुकी निशा भी अब,
शब्द ने ललकारा बन्धन को
चरणों में है आसमाँ भी अब ।

तोड़ो सन्नाटा

नहीं देर करना
सागर में तरना,
जो सुप्त हैं उनमें
जागृति भरना !

निशा से दबे जो,
सुनसान हैं अब,
उठा दो उन्हें तो,
निज गार दूँ तब ।
तोड़ो सन्नाटा,
मधु झंकार करना,
जो सुप्त हैं उनमें,
जागृति भरना ।।

युवा हैं यौवन से,
चंचल हैं मन से,
पड़े हैं जो यों व्यर्थ,
सोये हैं तन से,
हे शक्ति ! आ तू
इन्हें दीप्त करना
जो सुप्त हैं उनमें
जागृति भरना ।।

27-03-2008

भाग - २

जिन्दगी जहर है

लक्ष्यहित जीवन सुपथ पर,
मोड़ पग – पग ही मिले,
हँस – हँस जो खुद ही मौत माँगे
फूल तो उसको मिले ।

हलचलों का जहर जीवन,
विवशता सबको मिली,
ठोकरों काँटों ने मिलकर,
देह कोमल है छिली ।

किन्तु तो बेहोश गिरते,
लक्ष्य उनको कब मिला ?
हैं भटकते पर न मिलता,
पुष्प जीवन में खिला ।
जहर भी है जिन्दगी तो,
पलक घुँटते आ उसे ।
कण्ठ ही तो नील होगा,
परवाह उसकी है किसे ?

27-03-2008

सिसकती श्वासों को

कल आते ही मैं जाऊँगा,
बुझते दीप जलाने
आज मिले इस समय में मुझको
बुझता दीप जलाना है ।

कल आते ही मैं जाऊँगा,
अमृत रस बरसाने,
आज धधकती आग से,
जलता दीप बुझाना है ।

कल आते ही मैं जाऊँगा,
अपना गीत सुनाने,
आज सभी दर्दों से भर-भर,
गीत मुझे फिर गाना है
कल आते ही मैं आऊँगा,
तेरा मन हर्षाने,
आज सिसकती श्वासों को,
धैर्य दिलाने जाना है ।

बदलते गाँव

हा हन्त ! हरित वन,
बन गये काँटों भरे ।
उजड़ गये रे पहाड़,
पहचाने नहीं जाते ।
नगर – डगर की होड़ में,
बदलाव की दौड़ में,
ये गाँव पहचाने नहीं जाते ।

हर प्रात भयंकर वेस की,
हर रात भीषण क्लेश की,
अन्धकार हुआ दोपहर,
लोग जाने नहीं जाते,
रूप के बदलाव में,
हृदय के घाव में,
ये दिल हैं जाने नहीं जाते ।

27-03-2008

अन्दर आग, बाहर तूफान

सारा पथ आच्छादित था,
निशा थी काली चादर में,
अन्दर - अन्दर आग धधकती,
तूफान भयंकर बाहर में ।

घिरा काल से आज पथिक,
लक्ष्य है चोटी चढ़ने का,
पाँव फिसलते हैं नीचे को,
कौन दे साहस बढ़ने का ।

गिरा जोर से राह में राही,
अनजाना साथी पकड़ा,
सदियों से बेचैन पड़ा,
इन्तजार में था जो खड़ा

पशु पक्षी, मानव न था,
नहीं देव कोई नारायण,
जो लिपटा सहारा देने,
वह छोटा सा पत्थर था ।

प्रातः हूँ

मैं वह प्रातः हूँ
जिसने हृदय के उद्‌गारों को
भावों को बदला ।
और
तूफानों से उजड़े खण्डहरों को,
गाँवों में बदला ।

मैं वह प्रातः हूँ
जिसने
दर्द भरा गीत तुम तक पहुँचाया
और
रात-दिन जलते-जलते
एक ज्योति दी,
जबकि आसमाँ पर
था अँधियारा छाया ।

27-03-2008

उलझन

कुछ सपनों में खोया था,
जाने क्यों मैं रोया था ।
पल में यहाँ–वहाँ जाना,
किन्तु नहीं कुछ भी पाना,
देखा सबने सोते मुझको,
कहाँ एक क्षण सोया था
कुछ सपनों में खोया था,
जाने क्यों मैं रोया था ।

सुनता पद की सी चाप,
झंकृत होता अपने आप,
उठकर देखा उस क्षण में,
कुछ उलझन थी कण–कण में,
तुमने मुझको देखा होगा ?
ढूँढ़ रहा जो बोया था,
कुछ सपनों में खोया था ।
जाने क्यों मैं रोया था ।

मैं मधुवन दर्शन

मैं मधुवन अन्तरतम का
दर्शन हूँ मैं नन्दनवन का ।

सुगन्ध सभी को दे जाता है
सौरभ बन गीत सुनाता जो
अपनी अनुपम छटा बिखारे
सबका ही मन लुभाता जो,
तिमिर मिटाने सतत जला जो
मैं दीप बना जन मन का
मैं अंकन हूँ नन्दनवन का ।

कटु कठोर नव कोंपल में,
संवेदन की धड़कन बन,
प्रतिमन को हर्षित करने,
गया मेरा अकलुषित मन,
जो हृदय में समा गया है
वही भाव अपनेपन का,
मैं दर्शन हूँ नन्दनवन का ।

प्रगति गीत का प्रथम छन्द,
मैं कालचक्र हूँ प्रदूषण का
शीतल फुव्वारों की झड़ी मैं
बना हूँ दिल का आभूषण
सूना-सूना लगता था जो
मैं दीप बना उस आँगन का
मैं दर्शन हूँ नन्दनवन का ।

27-03-2008

प्रश्न

फल पाता वह वैसे ही
जैसा कोई बोता है
गद्‌गद हृदय तब होता
जब मानस हृदय धोता है ।

कुछ खाते, कुछ पीते हैं,
कुछ भूले-भटके मिलते हैं
फूल एक से होने पर भी,
काँटों में सब खिलते हैं ।

स्वार्थों का जहरीला पथ,
गरल मिले किस क्षण किसको,
'नंगा भूखा बन्धु खड़ा' वह
सब धक्का देते हैं जिसको ।

क्या जीवन सच में इनका ?
जो जीवित रहते मरते हैं ।
प्रश्न यही आज सामने,
हम उनका क्या करते हैं ?

ज्योति दिल में

ज्योति बनकर लौ हृदय में
दर्द से पनपी यहाँ ।
पीर प्राणों ने सिखायी
नेह भरना है कहाँ ?

कभी तो यह दीप बनकर,
प्रकाश औरों को करे,
कभी टीस बनकर तड़फाये,
दिल में नित हल चल भरे ।

कभी डाह हृदय समाती,
कभी बहती भावों में,
कभी सागर में तिरती,
डगमगाती नावों में ।

कभी तो यह प्यार बनकर,
दिल में ही विचरण करे,
कभी यह विकराल बनके,
क्रान्ति के कण मन भरे ।

तूफान या आँधी चले,
पर निरन्तर ही जले,
तम को हर प्रकाश करती
नहीं दिखती यह भले ।

27-03-2008

क्या होगा ?

आते - जाते देखी मैंने,
भीड़ इकट्ठा चिल्लाती
कोई दौड़ रहा था कोई,
पकड़े था अपनी छाती ।

दृष्टि पड़ी मेरी सहसा,
उस यौवन पर जो घिरा हुआ,
गूँगा था, बेचैन पड़ा,
जो भावों से भरा हुआ ।

डबडबाते आँसू उसके,
डगमगाते पग इसके,
फटकार रहे जन पकड़-पकड़,
बेचैनी रग-रग जिसके ।

बाँध लिया क्यों पकड़ उसे,
जिसे होश न तन - मन का
सोच रहा हूँ अब क्या होगा
बेहोश होते इस जन का ।

डगमगाते मन समझना

चूर हैं थककर निरूपम
किन्तु फिर भी बढ़ रहे पग ।
गिर कभी घुटनों के बल,
फिर भी मंजिल चढ़ रहे पग ।

डगमगाते मन समझना,
दुर्बल क्षणिक बनते नहीं हैं ।
बढ़ते सदा जो दृढ़ता से,
सीढ़ियाँ गिनते नहीं हैं ।

विश्राम से मतलब नहीं है,
बढ़ते रहे पथ पर आगे ।
अब तो बाँध न सकते इनको,
गुँथे हुए अनगिन तागे ।

दूर शिखर चढ़ना है,
किसी खुशी की चाह नहीं ।
फूल मिलें, काँटे, चट्टानें,
मुझको कुछ परवाह नहीं ।

जीवन बसन्त

भँवर जगाये इसने सोये,
पुष्प दिये सब उनको खोये,
कोकिल को पास बुलाया,
सब आँसू पोंछे रोये,
जब-जब भी कोई सोयेगा,
मधुकर बन तुम गाना,
हे बसन्त ! जल्दी आना !

हर पल था, वह घुटन भरा,
तड़फ रही थी पले धरा ।
कण-कण को पुलकित करके,
नव अंकुर को जन्म दिया ।
मेरे जीवन के बसन्त ने,
सबको आनन्दित किया ।

जब-जब भी पतझड़ आया,
डाल-डाल खाली पाया ।
तब नव जीवन नयी प्रेरणा,
नयी स्फूर्ति यह लाया,
घुटनभरी तड़फी श्वांसों ने,
तब उन्मुक्त हो गीत गाया,
अन्धकार तनिक न आये,
अब ज्योति पुंज को लाना,
! जल्दी आना !

नव यौवन दान दिया इसने,
पल्लव का मान किया इसने,
नव उमंग नयी चेतना,
उन्नत मार्ग दिया इसने,
सुप्त चेतना होगी जब भ्ज्ञी,
छोड़ेगा जन मधु पाना,
पुष्पों को विकसित कर लाना,
हे बसन्त ! जल्दी आना !

भाग - ३

डाली

प्रफुल्लित हो झूम रही,
बता आज क्या भाया है ?
चुपके-चुपके कान में कह दो,
कौन खूशी वह आयाी है ?

कल तक तुम क्यों मूक खड़ी थीं ?
बन गूँगी बेचैन पड़ी ।
आज तो तुम खुशियों से जड़ी हो,
पुष्प लिये हर राह खड़ी ।

छीन लिये थे किसने गहने,
सज्जित किसने तुझे किया ?
फूल डालकर मेरे ऊपर,
व्यर्थ मुझे क्यों रोक लिया ?

रोक लिया तो संग में चलना,
खुशियाँ देने जन-जन को,
अमृत रस बरसाने चलना,
पड़े हुए नीरव मन को ।

बेख़बर

शक्ति हो जब क्षीण तन की,
कान्ति भी हो नष्ट मन की,
पास भी तब दूर लगता,
फड़फड़ाती आँख जन की ।

मार्ग चाहे पगतले हो,
हार क्यों न उस गले हो,
तीर या तलवार लगती,
फूल ही चाहे खिले हों,

कभी बन-बनकर पतंगे
गयीं संग में भी तरंगे,
कह चुके वे लड़ी से,
बेखबर फिर भी पतंगे ।

दिल न बुझा पाये

खुश करने निज का दिल,
स्वयं बने सर्पों का बिल,
मौका यों पाये जैसे,
चुप-चुपके आये वैसे ?

विष भरे विषैले मन से,
माया में उलझे फन से,
सत जन का दंशन किया,
चैन खुशी का तब लिया ।

बस जहर को फैलाकर,
तब अन्यों को कहते जाकर,
सुन्दर जो भी पुष्प खिलेगा,
शीघ्र उसे गरल मिलेगा,
चिन्तन सारा है यही,
जीवन-धारा है यही ।

अत्याचार सब पर ढाये,
फिर भी वे रंग नहीं लाये ।
सर्प बना जो मानव जीवन,
दिन को कभी न बुझा पाये ।

27-03-2008

जिन्दगी की राह पर पुकार खो गई !

मुझे पुकारते पुकार, पुकार खो गई,
उठा मुझे आँसुओं से नैन, नैन धो गई ।

पता नहीं सुबह मिली,
किस साँझ को वह खो गई,
दोष है हृदय लड़ी का,
हृदय-हृदय से जुड़ गई ।

सरल समझ की जो पुकार, वह दुर्लभ पुकार हो गई,
मुझे पुकारते पुकार, पुकार खो गई ।

पता नहीं वह कौन है ?
क्यों साथ-साथ चल रहा,
वह आग जल रही कहाँ ?
हृदय में पिघल रहा ।

जिन्दगी की राह में जो दर्द बो गई,
मुझे पुकारते पुकार, पुकार खो गई ।

27-03-2008

मन ही मन रोया

झुलसता हृदय ये तेरा,
काँपती आवाज थी,
लाल चेहरा तर बना,
तन-बदन पर साज थी ।

रात सोते सोचता था,
प्रात कब उठ आयेगा,
भागता दौड़े निरन्तर,
सफलता कब पायेगा ?

प्रात होते व्यस्त होता,
होश निज की कुछ नहीं ।
भागते मुँह सूखता था,
बूँद न मिलती कहीं ।

रात को थक चूर बैठा,
और मन-मन खूब रोया,
अश्रुधारा को पिये ही,
शान्त भूखे पेट सोया ।

27-03-2008

साथी पाया

लगा अकेलापन मुझको,
एकांकी विचरण मेरा ।
शहरों में, गाँवों में, वन में,
मृग का सा यह मन मेरा ।

बात करूँ किससे अपनी,
कोई भी नहीं था अपना ।
रहा भी होगा यदि कोई,
तो वह था केवल सपना ।

लगता कभी-कभी ऐसा,
आ रहा है कोई साथ,
छू-छूकर मेरे तन को,
कर रहा है कोई बात ।

इधर-उधर देखा मैंने,
पत्ता तक था हिला नहीं,
मानव की तो बात दूर,
वायु वेग तक मिला नहीं ।

पर जब चलते कदम मिले,
साथ ही गीतों को गाते,
'मैं पीदे हूँ बढ़ते जाओ',
सुना किसी को मुस्कराते ।

तब विस्मय हो देखा मैंने,
साथ अपनी ही छाया ।
इस जीवन के औघट पथ में,
यही साथी अपना पाया ।

मैं पीर हूँ तुम्हारी

मैं भटक रहा था,
जल-जल तड़फ रहा था,
उस ऊष्णता की लू को,
मैं चुप-चुप
सह रहा था ।

जल-जल तू मेरे प्यारे,
मैं साथ हूँ तुम्हारे,
जलकर प्रकाश देना,
यह कौन कह रहा है ?

देखा तो था जिधर भी
कोई न था उधर भी,
फिर कौन आ जिगर में
हल-चल मचा रहा है ?
दौड़े झंकार आयी
हृदय में वह समायी,
तू कौन है डगर में,
सुख-दुख रचा रहा है ?

मैं पीर हूँ तुम्हारी
तुमसे ही मैं हारी
आँसू का रूप लेकर
कण्ठों का
हार बन गयी हूँ ।

पीछा किया था मैंने,
आने दिया था तुमने,
अब गीत बनके तेरे,
हृदय का,
तार बन गयी हूँ,
नीरस पड़े दिलों की,
मैं,
हार बन गयी हूँ,
मैं गीतिका तुम्हारी
श्रृंगार बन गयी हूँ ।

तड़फा था

हँस – हँसकर गाता हूँ,
प्यार सभी का पाता हूँ ।
घूम घूमते थककर बैठा,
रात हुई निज तन पर लेटा,
भटक फिर भी मन में,
कंपन–थिरकन है तन में ।

मिलता सबको, कहता सब से,
चैन नहीं है मुझको तब से,
सोच रहा हूँ नित मैं जब से,
था तो मैं तब बचपन में,
भटकन फिर भी मन में,
कंपन–थिरकन है तन में ।

उठने के हित खाता हूँ
सुख–दुख जो पाता हूँ
बाहर खुश आँखों में पानी
बात क्या है किसने जानी ?
भटकन फिर भी मन में
कंपन है, थिरकन है, तन में ।

गूँगे उद्गार

आज गूँगे बन पड़े हैं,
अन्तस्थ के ये उद्गार ।
अभी-अभी के खिलते पुष्प,
बन आते क्यों कंटक खार ।

किसे सुनाऊँ ? कैसे गाऊँ ?
मैं गूँगा चित्र खड़ा हूँ ।
कोई देख न ले मुझको,
मैं चुपके यों ही पड़ा हूँ ।

यह मेरे शब्द आँसू बन
नयनों में विकल पड़े हैं
जिनको स्वयं न रोक सका
आँसू में निकल बहे हैं ।

लगता है देखा न किसी को
अंधा सा ही पड़ा हूँ
कोई देख न ले मुझको
मैं चुपके यों ही पड़ा हूँ ।

27-03-2008

तूफानी रात

यह तूफानी रात क्यों आयी ?
यह वर्षा बिन बादल क्यों ?
बिजली चमक-चमक कर गिरती
तारे कहते हलचल क्यों ?

बूँदें टप-टप कर गिरतीं,
पत्थर सा प्रकार करे,
डूब गये बन घाव ह्दय में,
कौन इन्हें अब पार करे ?

करुणामय क्रन्दन ने मेरे,
मानस को भी दललाया
गूँथ-गूँथ अनल ज्वाला,
विह्वल तन को सहलाया ।

अन्तस्थल में

अन्तस्थल में उमड़ रही है,
बाढ़ भयंकर प्रलय की ।
आँखों में बही अश्रुधार,
अधर में कंपन सुरलय की ।

भाव तरंगें बनकर हैं,
ध्येये सामने अचल खड़ा ।
सोच-सोचकर बोल न सकता
कोतूहल में हूँ मैं पड़ा ।

अब निज क्रिया जादू सी,
जल-चल तन-मन में भरती ।
स्वर्ग बनाती कोना-कोना,
कण-कण को सोना करती ।

27-03-2008

चिन्ता

पल भर के लिए सही,
मुझे छोड़,
कुछ चैन लेती,
इच्छा न थी सुख की,
दुख में ही सही,
सोचने तो देती !

सब देख रहा हूँ,
बहुत दूर बहा हूँ,

और
दूर बहा ले जाने में,
मेरी छवि मिटाने में,
मेरी खुशी के गाने में,
उच्च लक्ष्य के पाने में,
पाँव के आगे जाने में,
इस मन को समझाने में,
निज कारा के थाने में,

27-03-2008

मेरे खाने के दाने में,
प्यार किसी का पाने में,
जीवन ज्योति जलाने में,
इस दिल को बुझाने में,
जीवन खुशी बहाने में
सब !
तेरा ही हाथ है,
जीवन बाधाओं से,
व्यर्थ तेरा साथ है,
मैं !
इसे देख भी चुप-चुप,
सब सह रहा हूँ,
तू जिधर ले गयी,
मैं उधर बहा हूँ,

किन्तु -
कान खोलकर सुन ले
रूप में पाषाण लूँगा,
दिशा तेरी मोड़ दूँगा,
राह निज की जोड़ दूँगा
पार बहना छोड़ करके,
मार्ग तेरा रोक लूँगा ।

मैं जानता हूँ
तेरा नाम चिन्ता है,
चिता में ले जाती है ।
पर ये तो बता ?
तन-मन सारा जला-जला,
आखिर तू क्या पाती है ?

यह सच है
तूने खुशी को छीना है,
सुनले
मुझे तो जीवन जीना है,
मुझे अभी कुछ करना है,
प्रकाश स्वयं में भरना है,
कष्टों से नहीं डरना है ।

इसलिए आज से,
मैं साथ तेरा छोड़ दूँगा,
हर राह पर मैं मोड़ लूँगा,
तू जहाँ भी मिल गयी,
बन्धन तेरे सब तोड़ लूँगा,

और तब
उच्च आसन में सुशोभित
लक्ष्य मुझको प्राप्त होगा ।
प्रगति का सन्देश देने
देव मेरे साथ होगा ।